17 सितम्बर 2008, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-064 / 2006-08

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

जैसा आत्मा का स्वभाव है, उसे वैसा ही जानना, वैसा ही मानना और उसी में तन्मय होकर परिणम जाना ही वीतरागी सरलता है, उत्तम आर्जव है।
ह्न धर्म के दशलक्षण : पृष्ठ- 51

वर्ष : 31, अंक : 12 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये
सितम्बर (द्वितीय), 2008 प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

दशलक्षण महापर्व धूमधाम से मनाया

दिनांक 4 सितम्बर से 14 सितम्बर, 2008 तक दशलक्षण महापर्व देश-विदेश में बड़ी धूमधाम से मनाया गया। अभी यहाँ जयपुर महानगर के समाचार प्रकाशित किये जा रहे हैं, शेष समाचार अगले अंक में प्रकाशित किये जायेंगे।

1. श्री टोडरमल स्मारक भवन : यहाँ पर्व के अवसर पर प्रात: पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री के निर्देशन में महाविद्यालय के छात्रों द्वारा दशलक्षण मंडल विधान किया गया। तदुपरान्त गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन एवं ब्र. यशपालजी जैन के बारह भावना के आधार से प्रवचन हुए। दोपहर में ब्र. विमलाबेन द्वारा तत्त्वार्थसूत्र की कक्षा तथा रात्रि में पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल एवं पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल के दशधर्मों पर हुए प्रवचनों का लाभ समाज को मिला। प्रवचनोपरान्त श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के छात्रों द्वारा अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किये गये।

2. श्री दिगम्बर जैन मंदिर, तेरापंथियान, जौहरी बाजार : यहाँ समाज के विशेष आग्रह पर सिद्धान्तसूरि पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल पधारे। आपके द्वारा प्रतिदिन प्रात: समयसार के कर्त्ताकर्म अधिकार पर सरल-सरस प्रवचनों से आशीतीत लोगों ने लाभ लिया। प्रवचनोपरान्त प्रतिदिन महाविद्यालय के छात्र सर्वज्ञ भारिल्ल एवं आराध्य टडैया ने प्रश्नमंच का संचालन किया ।

3. श्री मुलतान दिगम्बर जैन मंदिर, आदर्शनगर : यहाँ पर्व के अवसर पर प्रात: पूजन-विधान के पश्चात् पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर के प्रवचनों का लाभ मिला। सायंकाल पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री के प्रवचन हुये। दोनों समय प्रवचनों से समाज विशेष लाभान्वित हुई। रात्रि में विविध ज्ञानवर्धक कार्यक्रम कराये गये।

3. श्री दिग. जैन मंदिर, महावीर नगर : यहाँ प्रतिदिन प्रात: पूजन विधान एवं सायंकाल पण्डित संजीवकुमारजी गोधा के सारगर्भित प्रवचनों के अतिरिक्त सांस्कृतिक कार्यक्रम हुये। कार्यक्रमों में लगभग 300 लोगों ने लाभ लिया।

4. श्री दिगम्बर जैन मंदिर, बड़ेदीवानजी : यहाँ राजस्थान जैन सभा के तत्त्वावधान में दसलक्षण महापर्व के अवसर पर डॉ. दीपकजी जैन द्वारा प्रतिदिन सायंकाल दसलक्षण धर्म पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला।

इनके अतिरिक्त शक्तिनगर में डॉ. शुद्धात्मप्रकाशजी जैन, **श्री महावीर दिगम्बर जैन स्कूल सी-स्कीम में** पण्डित अभिषेकजी शास्त्री व कु. प्रतीति पाटील, **मालवीय नगर सैक्टर-१०** में पण्डित विनयचंदजी पापडीवाल,

(शेष पृष्ठ-८ पर....)

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन द्वारा ह्न
राष्ट्रीय स्तर पर बुंदेलखंड तीर्थयात्रा

(दिनांक ७ दिसम्बर, ०८ से १४ दिसम्बर, ०८ तक)

अत्यंत हर्षपूर्वक सूचित किया जाता है कि आत्मानुभूति के संकल्प सहित तत्त्वप्रचार में संलग्न अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन द्वारा बुंदेलखंड के तीर्थक्षेत्रों की यात्रा हेतु **वीतराग-विज्ञान तीर्थयात्रा संघ** निकाला जा रहा है, जिसमें देशभर से लगभग ३०० साधर्मी सम्मिलित होंगे।

यह यात्रा दिनांक ७ दिसम्बर, ०८ को सिद्धक्षेत्र सोनागिर से प्रारम्भ होकर करगुंवाजी, पावागिरि, गोलाकोट, खनियांधाना, चंदेरी, खंदारगिरी, थूवोनजी, बरौदास्वामी, सीरोनजी, पपौंरा, बानपुर, देवगढ़, ललितपुर, आहारजी, खजुराहो, डेरापहाडी, नैनागिर, कुण्डलपुर, द्रोणगिरी आदि तीर्थक्षेत्रों के लगभग ३०७ जिनमंदिरों के दर्शन वन्दना कर दिनांक १४ दिसम्बर, ०८ को सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरी में सम्पन्न होगी।

इस यात्रा के दौरान न केवल क्षेत्रों के दर्शन का लाभ मिलेगा; अपितु साथ ही तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल आदि यात्रा के दौरान साथ रहनेवाले अन्य विशिष्ट विद्वानों के माध्यम से तत्त्वज्ञान का लाभ मिलेगा।

इस यात्रा के संघ पति बनने का सौभाग्य **श्री जमनालालजी सूरजदेवी सेठी, जयपुर** को प्राप्त हुआ है।

यह सम्पूर्ण यात्रा **2 X 2** लग्जरी बसों के द्वारा सम्पन्न की जायेगी तथा यात्रा के दौरान यथोचित आवास और शुद्ध सात्विक भोजन (हिन्दी व गुजराती) के अतिरिक्त उच्च कोटि की अन्य व्यवस्थायें रहेंगी ।

यात्रा में सम्मिलित होने हेतु कुल **राशि चार हजार पाँच सौ रुपये** रखी गई है, जिसमें श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महा. के स्नातकों (पत्नी सहित) को यात्रा संघपति की ओर से **एक-एक हजार रुपये** की छूट रहेगी।

यात्रा में सम्मिलित होने हेतु आवेदन की **अंतिम तिथि १४ अक्टूबर** है। यात्रा की विस्तृत जानकारी एवं आवेदन पत्र हेतु निम्न पते एवं फोन नम्बर पर सम्पर्क करें ह्न

वीतराग-विज्ञान यात्रा संघ
C/O अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन,
ए ह्न ४, बापूनगर, जयपुर ह्न १५ (राज.)
फोन नं. ह्न (०१४१) २७०५५८१, २७०७४५८,
पीयूष जैन - ०९४१३३४७८२९, धर्मेन्द्र शास्त्री - ०९४१४७१७८२३

अक्टूबर शिविर पत्रिका

अक्टूबर शिविर पत्रिका

सम्पादकीय - 14

चलते-फिरते सिद्धों से गुरु

ह्न पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे ...)

वर्षाऋतु का समय, उसमें भी श्रावण मास, अत: पानी का बरसना कोई नई बात नहीं है; परन्तु जब वर्षा थमती ही नहीं, लगातार दो-दो दिन तक सूरज दिखाई नहीं देता; तो लोग घर से निकलने को तरस जाते हैं। जगह-जगह गड्ढ़ों में पानी भर जाता है। जहाँ देखो वहाँ गलियारों में कीचड़ ही कीचड़ हो जाता है। चारों ओर हरियाली भी हो जाती है।

इन परिस्थितियों में सुविधा भोगी गृहस्थ कितनी भी अनुकूलतायें क्यों न जुटा लें, फिर भी परेशान हो जाते हैं तो साधुओं की तो बात ही क्या? मुनि संघ को प्रतिष्ठापना समितिपूर्वक मल-मूत्र क्षेपण करने हेतु दूर-दूर तक कोई निर्जन्तुक जगह दिखाई नहीं देती तो श्रद्धावान श्रावक साधुओं की असुविधा देखकर चिन्तित हो जाते हैं।

बुजुर्ग श्रावकों को यह ज्ञात तो था कि अहिंसा महाव्रत और प्रतिष्ठापना समिति के नियमानुसार निर्जन्तुक स्थान में ही मलमूत्र क्षेपण करने का विधान है; परन्तु जब दूर-दूर तक ऐसा स्थान दिखाई नहीं देता हो तो ऐसी स्थिति में मुनिराज जायें तो जायें कहाँ?

उनकी इस चिन्ता को देख मुनिचर्या से सर्वथा अनभिज्ञ एक श्रावक बोला ह्न ''इसमें ऐसी क्या समस्या है? आप लोग व्यर्थ ही चिन्ता कर रहे हो। जब आज इतने अच्छे-अच्छे शौचालय के साधन उपलब्ध हैं तो संघ को बाहर जाने की क्या जरूरत है?''

समस्या तो सबके सामने थी ही, अतः यह जानते हुए भी कि संभवतः आचार्य श्री इस प्रस्ताव को स्वीकार नहीं करेंगे, फिर भी यह सोचने लगे कि यहीं शौचालयों की कोई अस्थाई व्यवस्था की जाय तो क्या हानि है?

जब यह प्रस्ताव लेकर समिति के व्यक्ति आचार्यश्री से निवेदन करने गये तो आचार्यश्री ने आँख पलटते हुए कहा ह्न ''कैसी बातें करते हो? ये सब समस्यायें थोड़े-बहुत रूप में प्रतिवर्ष आतीं ही हैं। हम और हमारा संघ इन सब परिस्थितियों का सहजता से सामना करने में समर्थ है।

आगम में ऐसा विधान है कि विशेष परिस्थितियों में अपवाद मार्ग के अनुसार मुनि पानी के प्रवाह में चलकर जा सकते हैं। तथा कीचड़ आदि में से भी परिमर्दित मार्ग से जा सकते हैं। परिमर्दित अर्थात् जिस मार्ग से मानवों और पशुओं का आवागमन प्रारंभ हो गया है। आगम में इन परिस्थितियों के विषय में ऐसा भी लिखा मिलता है कि ह्न एक होता है राजमार्ग और दूसरा होता है अपवाद मार्ग। अपवाद मार्ग को संकटकाल में अपनाया जाता है; किन्तु संकटकाल में भी अहिंसक रीति से ही यदि कोई विकल्प संभव हो तो ही अस्थाई उपाय किया जाना चाहिए। इस बहाने किसी भी प्रकार से शिथिलता नहीं होनी चाहिए।''

इतना समाधान करते हुए आचार्यश्री ने कहा ह्न ''चलो प्रवचन के लिए श्रोता प्रतीक्षा कर रहे हैं। तुम भी पहुँचो, हम भी आते हैं।''

प्रवचन प्रारंभ करते हुए आचार्यश्री ने कहा ह्न ''आज पंचाचार विषय की चर्चा करना है। मुनि साधना के सिद्धान्तों का व्यावहारिक, प्रयोगात्मक अथवा क्रियात्मक पक्ष आचार कहलाता है। आचार के निम्नांकित पाँच भेद हैं ह्न दर्शनाचार, ज्ञानाचार, चारित्राचार, तपाचार और वीर्याचार। इसकारण इन्हें पंचाचार कहते हैं। पंचपरमेष्ठी के पदों की प्राप्ति में उक्त पंचाचारों के पालन करने का महत्त्वपूर्ण योगदान है।

पंचाचारों में दर्शनाचार ही सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि दर्शनाचार के बिना कोई भी आचार सम्यक्पने को प्राप्त नहीं हो सकता है।

आचार्य सकलकीर्ति ने अपनी सुप्रसिद्ध कृति मूलाचार प्रदीप में दर्शनाचार का निरूपण २४२ गाथाओं में किया है, दर्शनाचार अर्थात् सम्यग्दृष्टि का बाह्य आचार, इस संदर्भ में सम्यग्दर्शन की जो महिमा आगम में गाई गई है उसका संक्षिप्त सार यहाँ प्रस्तुत है।

'यह सम्यग्दर्शन समस्त गुणों का निधान है, मोक्ष महल की प्रथम सीढ़ी है, पापरूपी वृक्ष को काटने के लिए कुठार के समान है, धर्म का मूल है और सुख का समुद्र है; इसलिए पुण्यवान पुरुषों को परम यत्न से इस सम्यग्दर्शन को धारण करना चाहिए।'

सम्यग्दर्शन की उत्कृष्टता के सन्दर्भ में आचार्य कुन्दकुन्द कहते हैं ह्न

दंसणमूलो धम्मो उवइट्ठो जिणवरेहिं सिस्साणं।
तं सोऊण सकण्णे दंसणहीणो ण वंदिव्वो।।

जिनवरदेव ने अपने शिष्यों से कहा है कि धर्म का मूल सम्यग्दर्शन है; अतः हे भव्यो! तुम कान खोलकर सुन लो कि सम्यग्दर्शन से रहित व्यक्ति वन्दन करने योग्य नहीं है।

सम्मत्तरयणभट्टा जाणंता बहुविहाइ सत्थाइं।
आराहणाविरहिया भमंति तत्थेव तत्थेव।।

जो पुरुष सम्यक्त्वरूप रत्न से भ्रष्ट है, वह भले ही अनेक प्रकार के शास्त्रों को जानता हो, तथापि वे आराधना से रहित होते हुए संसार में ही भ्रमण करते हैं।

सम्मत्तविरहियाणं सुट्ठु वि उग्गं तवं चरंताणाम्।
ण लहंति बोहिलाहं अवि वाससहस्सकोडीहिं।।

जो मुनि सम्यग्दर्शन से रहित हैं, वे हजार-करोड़ वर्षों तक भलीभाँति उग्र तप करें; तब भी उन्हें बोधि अर्थात् रत्नत्रय की प्राप्ति नहीं होती है।

सम्मत्तणाणदंसणबलवीरियवड्ढमाण जे सव्वे।
कलिकलुसपावरहिया वरणाणी होंति अइरेण।।

जो पुरुष सम्यग्दर्शन सहित ज्ञान, दर्शन, बल और वीर्य से वर्द्धमान हैं तथा इस पंचमकाल के मलिन पाप (गृहीत मिथ्यात्व) से रहित हैं, वे सभी अल्पकाल में केवलज्ञानी होते हैं।

आचार्य समन्तभद्र श्री रत्नकरण्ड श्रावकाचार में कहते हैं ह्न

न सम्यक्त्वसमं किंचित् त्रैकाल्ये त्रिजगत्यपि।
श्रेयोऽश्रेयश्च मिथ्यात्वसमं नान्यत्तनूभृताम्।।

तीन काल और तीन लोक में सम्यग्दर्शन के समान अन्य कोई भव्य जीवों का कल्याण करनेवाला नहीं है तथा तीन काल और तीन लोकों में मिथ्यात्व के समान अन्य कोई अकल्याण करनेवाला नहीं है।

और भी सुनो ह्न आचार्य सकलकीर्ति कहते हैं कि ह्न मिथ्यात्वरूपी विष से दूषित हुए ज्ञान और चारित्र कितने ही उत्कृष्ट क्यों न हों, फिर भी उनसे मोक्ष की प्राप्ति कभी नहीं हो सकती; इसलिए कहना चाहिए कि बिना सम्यग्दर्शन के ज्ञान अज्ञान है, चारित्र मिथ्याचारित्र है और समस्त तप कुतप है। जिसप्रकार बिना बीज के किसी भी खेत में कभी फल उत्पन्न नहीं हो सकते, उसीप्रकार बिना सम्यग्दर्शन के चारित्र नहीं होता और बिना रत्नत्रय के कभी भी मोक्ष की प्राप्ति नहीं हो सकती। **(क्रमशः)**

मोक्षमार्ग प्रकाशक का सार 6

तीसरा प्रवचन

– डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

महापण्डित टोडरमलजी को आचार्यकल्प कहा जाता है; क्योंकि उन्होंने जिनागम की जो सेवा की है; वह किसी भी रूप में आचार्यों से कम नहीं है। यद्यपि उन्होने आचार्यों जैसा महान कार्य किया है; तथापि उन्हें आचार्य न कहकर आचार्यकल्प कहा गया है; क्योंकि दिगम्बर जिनधर्म में आचार्य तो नग्न दिगम्बर संत ही होते हैं।

आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी ने इस तीसरे अधिकार में सांसारिक दुःख और उसके कारणों की चर्चा करने के उपरान्त मोक्षसुख और उसकी प्राप्ति के उपाय को बताया है; अत: इस तीसरे अधिकार में भी वे अपनी बात को स्पष्ट करने के लिये रोगी और वैद्य के उदाहरण को आगे बढ़ाते हैं।

जिसप्रकार वैद्य रोग का निदान करके रोगी की वर्तमान स्थिति को स्पष्ट करते हुये उसे इलाज करने की प्रेरणा देते हैं; उसीप्रकार पण्डित टोडरमलजी यहाँ कर्मबंधन का निदान करके, जीव की दुःखरूप वर्तमान स्थिति का ज्ञान कराकर, उसे दुःखों से छूटने के उपाय करने की प्रेरणा देते हैं।

वैद्य रोगी को बताता है कि तुम्हें अमुक बीमारी है, उसके कारण तुम दुःखी हो; तब रोगी कहता है कि मैं तो स्वस्थ हूँ; क्योंकि मेरा वजन चार किलो बढ़ गया है, अब तो मैं मोटा-ताजा हो गया हूँ। उसे समझाते हुये वैद्यजी कहते हैं कि वह मोटापन भी रोग ही है, आरोग्य नहीं।

इसीप्रकार जब शिष्य यह बात कहता है कि अब तो मुझे सर्वप्रकार अनुकूलता है, स्त्री-पुत्रादि भी अनुकूल हैं और खाने-पीने की भी कोई कमी नहीं है। तब आचार्यदेव कहते हैं कि हे भाई! जो अनुकूल संयोग तुझे सुखरूप लगते हैं, वे सभी सुखरूप नहीं, दुःखरूप ही हैं। इस जीव की संसार अवस्था में जो दुःख हैं; उन्हें पण्डितजी कर्मोदय की अपेक्षा से, एकेन्द्रियादि पर्यायों की अपेक्षा से और चार गतियों की अपेक्षा से समझाते हैं।

दूसरे अधिकार में यह बताया था कि कर्मों के उदय से जीव की कैसी दुर्दशा हो रही है, और अब तीसरे अधिकार में यह समझा रहे हैं कि वह अवस्था पूर्णतः दुःखरूप ही है, सुखरूप नहीं। तात्पर्य यह है कि इस संसार में चारों गतियों में सर्वत्र दुःख ही दुःख है, कहीं भी रंचमात्र भी सुख नहीं है। संसार में सुख खोजना, बालू में से तेल निकालने जैसा असाध्य कार्य है। अतः इस दिशा में किया गया प्रयत्न अकार्यकारी ही है। संसार को दुःखरूप सिद्ध करने के बाद पण्डितजी मोक्ष अवस्था की बात करते हैं। जीव की परमसुखरूप अवस्था का नाम ही मोक्ष है और सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र की एकरूपता ही मोक्ष का उपाय है।

इसप्रकार इस अधिकार का मूल प्रतिपाद्य सांसारिक दुःख और उन दुःखों के मूलकारणरूप भाव तथा परमसुखरूप मोक्ष अवस्था एवं उसे प्राप्त करने का उपाय बताना है।

इसी अधिकार को आधार बनाकर पण्डित दौलतरामजी ने छहढाला की पहली ढाल लिखी है; जिसमें चारों गतियों के दुःखों का निरूपण किया गया है। छहढ़ाला में एकेन्द्रियादि पर्यायों और गतियों की अपेक्षा तो दुःखों का निरूपण किया है; पर कर्मों की अपेक्षा की उपेक्षा कर दी है; पर इस मोक्षमार्गप्रकाशक में एकेन्द्रियादि पर्यायों और गतियों की अपेक्षा के साथ-साथ कर्मों की अपेक्षा से भी दुःखों का वर्णन विस्तार से किया गया है।

इसप्रकार इस तीसरे अधिकार में २६ पृष्ठों में दुःखों का वर्णन करने के उपरान्त ४ पृष्ठों में मोक्षसुख का वर्णन किया है और अन्त में प्रेरणा दी है कि यदि संसार के दुःखों से बचना है तो मोक्ष प्राप्त करने का पुरुषार्थ करो।

इस लोक में ऐसे लोग सदा ही रहे हैं कि जो यह कहते रहते हैं कि सुख प्राप्त करने के लिये मोक्ष में जाने की क्या जरूरत है; हम इस संसार को ही स्वर्ग बना देंगे। पण्डितजी कहते हैं कि भाई! स्वर्ग भी तो संसार में ही है; पर स्वर्ग में भी सुख कहाँ है? स्वर्ग-नरक सभी संसार में हैं और संसार दुःखरूप ही हैं, सुख तो एकमात्र मोक्ष में ही है।

प्रश्न :ह्न दूसरे अधिकार में तो यह कहा था कि बंध का निमित्त तो एकमात्र मोहकर्म का उदय ही है और यहाँ आठों ही कर्मों के उदय को दुःखरूप सिद्ध किया जा रहा है?

उत्तर :ह्न उक्त दोनों कथनों के दृष्टिकोणों में अन्तर यह है कि वहाँ तो मोहनीय कर्म के उदय में होनेवाले मोह-राग-द्वेष भाव बँध के कारण हैं ह्न यह बताया गया है और यहाँ यह बता रहे हैं कि मोह को छोड़कर ज्ञानावरणादि सातकर्मों के उदय में जो अवस्थायें हो रही हैं, जो संयोग प्राप्त हो रहे हैं; वे भी सुखरूप नहीं हैं, संतोष करने योग्य नहीं है; क्योंकि मोह का उदय विद्यमान होने से वे अवस्थायें भी दुःखरूप ही हो रही हैं।

ज्ञानावरण के क्षयोपशम से जो कुछ जानना होता है; उसमें भी अनेक पराधीनतायें हैं। स्वस्थ इन्द्रियाँ और प्रकाशादि बाह्य अनुकूलतायें तो चाहिये ही; एक सुनिश्चित दूरी और समीपता भी चाहिये। यदि वस्तु बहुत दूर हुई भी तो भी दिखाई नहीं देगी और अधिक पास हुई तो भी दिखाई नहीं देती।

उक्त अवस्था का चित्रण करते हुये पण्डित टोडरमलजी लिखते हैं ह्न

''वहाँ इच्छा तो त्रिकालवर्ती सर्वविषयों को ग्रहण करने की हैं। मैं सर्व का स्पर्श करूँ, सर्व का स्वाद लूँ, सर्व को सूँघूँ, सर्व को देखूँ, सर्व को सुनूँ, सर्व को जानूँ; ह्न इच्छा तो इतनी है; परन्तु शक्ति इतनी ही है कि इन्द्रियों के सम्मुख आनेवाले वर्तमान स्पर्श, रस, गंध, वर्ण, शब्द; उनमें से किसी को किंचित् मात्र ग्रहण करे तथा स्मरणादिक से मन द्वारा किंचित् जाने, सो भी बाह्य अनेक कारण मिलने पर सिद्ध हो। इसलिए इच्छा कभी पूर्ण नहीं होती। ऐसी इच्छा तो केवलज्ञान होने पर सम्पूर्ण हो।

क्षयोपशमरूप इन्द्रियों से तो इच्छा पूर्ण होती नहीं है; इसलिये मोह के निमित्त से इन्द्रियों को अपने-अपने विषय ग्रहण की निरन्तर इच्छा होती ही रहती है; उससे आकुलित होकर ऐसा दुःखी हो रहा है कि किसी एक विषय के ग्रहण के अर्थ (लिये) अपने मरण को भी नहीं गिनता है। जैसे हाथी को कपट की हथिनी का शरीर स्पर्श करने की, मच्छ को बंसी में लगा हुआ मांस का स्वाद लेने की, भ्रमर को कमल-सुगन्ध सूँघने की, पतंगे को दीपक का वर्ण देखने की और हरिण को राग सुनने की ऐसी इच्छा होती है कि तत्काल मरना भासित हो; तथापि मरण को नहीं गिनते।'' **(क्रमशः)**

अक्टूबर शिविर पत्रिका

अक्टूबर शिविर पत्रिका

17 सितम्बर 2008, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-064 / 2006-08

वीतराग-विज्ञान पाठशाला का शुभारंभ

रतलाम (म. प्र.) : यहाँ राम मोहल्ला स्थित श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन चैत्यालय में रविवार दिनांक २४ अगस्त को माणकचंदजी जैन, अहमदाबाद द्वारा वीतराग-विज्ञान पाठशाला का विधिवत् उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर उन्होंने अपने विचार व्यक्त करते हुये कहा कि वर्तमान युग में लौकिक शिक्षा के साथ-साथ ही धार्मिक शिक्षण की भी अत्यंत आवश्यकता है। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री पद्मकुमारजी अजमेरा ने की।

प्रति शनिवार व रविवार को संचालित होने वाली इस पाठशाला में अध्यापन कार्य हेतु श्री राजकुमारजी बाँसवाड़ा ने ध्रुवधाम विद्यालय, बाँसवाड़ा से विद्वानों को भेजने हेतु सहर्ष स्वीकृति प्रदान की।

शुभारम्भ के अवसर पर बाँसवाड़ा के छात्रद्वय श्री अमोलजी तथा श्री अमितजी द्वारा बाल एवं प्रौढ़ कक्षायें ली गईं। विद्यार्थियों की आशा से भी अधिक उपस्थिति के कारण मंदिरजी के अतिरिक्त एक कक्षा श्री कांतिलालजी झमकलालजी बड़जात्या के निवास स्थान पर भी लगाई गई।

व्याख्यानमाला सम्पन्न

मुम्बई : यहाँ दिनांक 27 अगस्त से 3 सितम्बर,08 तक जैन अध्यात्म स्टडी सर्किल द्वारा आयोजित 8 दिवसीय व्याख्यानमाला सम्पन्न हुई।

व्याख्यानमाला का आयोजन मुम्बई शहर के भारतीय विद्या भवन-चौपाटी, वालकेश्वर, सी. पी. टैंक, दादर, चिंचबंदर, चिंचपोकली, घाटकोपर, ताड़देव इत्यादि स्थानों पर हुआ।

इसमें डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित ज्ञानचंदजी सोनागिर, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, ब्र. हेमचंदजी 'हेम' देवलाली, पण्डित गुलाबचंदजी जैन बीना, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित विरागजी शास्त्री नागपुर, पण्डित फूलचन्दजी शास्त्री उमराला, पण्डित श्रेयांसजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित आदित्यजी शास्त्री खुरई, पण्डित किशोरजी शास्त्री, पण्डित अनुभवजी सोलापुर एवं पण्डित अभिषेकजी छिन्दवाड़ा इत्यादि विद्वानों के विभिन्न विषयों पर व्याख्यानों का लाभ उपस्थित जनसमुदाय को मिला।

स्लिपडिस्क रोगी ध्यान दें !

सम्पूर्ण उपचार बिना दवा, बिना कसरत, बिना चीरफाड, बिना आराम किए विश्व की नवीनतम तकनीक माइक्रो एक्यूप्रेशर द्वारा शीघ्र उपचार।

डॉ. पीयूष त्रिवेदी (मो.) 09828011871

गोल्ड मेडलिस्ट, बी.ए. एम.एस., एम.डी. (एक्यू.)

डिप्लोमा इन योगा, सुजोक (मास्को) एफ.ए.आर.सी. एस. (लंदन)

मेडिनोवा पोली क्लीनिक, केसरगढ, जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर

समय : सायं 6 बजे से 9 बजे तक, रविवार को प्रात: 8 से 12 बजे तक

नोट – एक्यूप्रेशर सेवा समिति द्वारा 300 से अधिक नि:शुल्क शिविर आयोजित।

अन्य रोग : जोडों का दर्द, गर्दन का दर्द, मोटापा, मायोपैथी, मानस विकृतियां, मधुमेह तथा उच्च रक्तचाप आदि की सफल चिकित्सा।

महावीर पुरस्कार एवं ब्र. पूरणचंद रिद्धिलता लुहाड़िया पुरस्कार-२००८

प्रबंधकारिणी कमेटी, दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी द्वारा संचालित जैन विद्या संस्थान श्री महावीरजी के वर्ष २००८ के महावीर पुरस्कार के लिये जैनधर्म, दर्शन, इतिहास, साहित्य, संस्कृति से संबंधित किसी भी विषयक पुस्तक /शोध प्रबंध की चार प्रतियाँ दिनांक ३० सितम्बर २००८ तक आमंत्रित हैं। इस पुरस्कार में प्रथम स्थान प्राप्त कृति को २१००१ रुपये एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जायेगा तथा द्वितीय स्थान प्राप्त कृति को ब्र. पूरणचंद रिद्धिलता लुहाड़िया साहित्य पुरस्कार ५००१ रुपये एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जायेगा। ३१ दिसम्बर २००५ के पश्चात् प्रकाशित पुस्तक ही इसमें सम्मिलित की जा सकती है।

* दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी द्वारा संचालित अपभ्रंश साहित्य अकादमी, जयपुर के वर्ष-२००८ के **स्वयंभू पुरस्कार** के लिये अपभ्रंश से संबंधित विषय पर हिन्दी अथवा अंग्रेजी में रचित रचनाओं की चार प्रतियाँ ३० सितम्बर, ०८ तक आमंत्रित हैं। इस पुरस्कार में २१००० रुपये एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जायेगा। ३१ दिसम्बर, ०५ से पूर्व प्रकाशित तथा पहले से पुरस्कृत कृतियाँ सम्मिलित नहीं की जायेंगी।

वर्ष २००७ का ब्र. पूरणचंद रिद्धिलता लुहाड़िया पुरस्कार आचार्य राजाराम जैन को उनकी कृति जैनधर्म और आयुर्वेद पर २१ अप्रेल, ०८ को श्री महावीरजी में महावीरजयन्ती के मेले के अवसर पर प्रदान किया गया।

आवेदन पत्र प्राप्त करने के लिये **संयोजक ह्न** डॉ. कमलचन्द सौगाणी, कार्यालय, जैन नसियाँ भट्टारकजी, सवाई रामसिंह रोड़, जयपुर से सम्पर्क करें।

(पृष्ठ-१ का शेष....)

जनता कॉलोनी में डॉ. श्रीयांसजी जैन, **स्वाध्याय मंदिर सांगानेर** में पण्डित चिरंजीलालजी, **मानसरोवर-वरुणपथ** में डॉ. नरेन्द्रजी जैन, **सेठी कॉलोनी** में पण्डित राजेशजी शास्त्री शाहगढ, **महात्मा गाँधी नगर** में पण्डित चिन्मयजी शास्त्री, **श्री महावीर चैत्यालय सी-स्कीम** में पण्डित गजेन्द्रजी शास्त्री, **सिवाड मंदिर** में पण्डित संजीवजी जैन, **सिविल लाइन्स** में पण्डित ताराचन्दजी सौगाणी, **प्रतापनगर** में पण्डित कैलाशचन्दजी मलैया द्वारा दसलक्षण पर मार्मिक प्रवचन हुए।

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, डबल एम.ए.(जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127